

पशु आहार में खनिज मिश्रण तथा नमक की उपयोगिता का महत्व

डॉ संजय कुमार मिश्र

पशु चिकित्सा अधिकारी पशुपालन विभाग मथुरा उत्तर प्रदेश

पशुओं के शरीर में सामान्यता लगभग सभी खनिज तत्व होते हैं लेकिन जिन तत्वों की कमी होने से किसी बीमारी के लक्षण या हीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाए वे आवश्यक खनिज तत्व कहलाते हैं। तीन आवश्यक खनिज तत्वों में कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, पोटेशियम, लोहा, तांबा, मैग्नीस, जिंक, कोबाल्ट आदि का पशु आहार में होना नितांत आवश्यक है। समुचित मात्रा में खनिज तत्व आहार में देने से पशु स्वस्थ रहते हैं। और उन में बढ़ोतरी सामान्य रूप से होती है साथ ही साथ उत्पादन भी सामान्य रहता है। खनिज मिश्रण एवं नमक से इन तत्वों की पूर्ति की जा सकती है।

शरीर में खनिज तत्व कई महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। हड्डियों की मजबूती कैल्शियम और फास्फोरस तत्वों से होती है। शरीर की मांसपेशियों और नसों को ठीक से कार्य करने के लिए कैल्शियम , मैग्नीशियम, सोडियम और पोटेशियम की आवश्यकता होती है इसलिए हृदय के सामान्य फैलने और सिकुड़ने से धड़कन क्रिया को बनाए रखने के लिए हृदय की मांसपेशियों को कैल्शियम , सोडियम और पोटेशियम के संतुलित घोल में भीगा रहना आवश्यक है। शरीर के मुलायम तंतुओं एवं द्रव में भी खनिज तत्व होते हैं। रक्त के लिए लोहा , तांबा और कोबाल्ट आवश्यक होता है। लोहा मुख्य रूप से हीम का घटक होने के कारण स्वसन क्रिया में प्रमुख योगदान करता है।

कोबाल्ट विटामिन B12 का घटक है इंसुलिन हार्मोन के लिए सल्फर आवश्यक है क्लोराइड नमक से प्राप्त होते हंश और अन्य तत्व खनिज मिश्रण से नमक की कमी से पाचन क्रिया ठीक से नहीं हो पाती है। शरीर में अम्लीय एवं क्षारीय समानता बनाए रखने के लिए सोडियम और क्लोराइड की आवश्यकता होती है जो साधारण नमक में पाए जाते हैं। अतः पशु आहार में खनिज मिश्रण व नमक सही अनुपात में होना आवश्यक है। पशुओं के शरीर में लगभग सभी खनिज तत्व होते हैं लेकिन जिन तत्वों की कमी होने से किसी बीमारी के लक्षण उत्पन्न हो जाए वह आवश्यक खनिज तत्व कहलाते हैं।

प्रजनन में विशिष्ट खनिजों की भूमिका:

कैल्शियम-

इसका कार्य गर्भाशय को सही रूप प्रदान करना , इन्वॉल्यूशन, भ्रूण का विकास , कोलेस्ट्रॉल का मेटाबॉलिज्म।

इसकी कमी से डिस्टोकिया, जेर का रुकना, गर्मी में ना आना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

फास्फोरस-

ऊर्जा मेटाबोलिज्म में मुख्य तत्व है। इसकी कमी से गर्भधारण करने की कम क्षमता , गर्मी में ना आना तथा अंडाशय में सिस्ट हो सकती है।